

## शिक्षण-सामग्री कक्षा-११

### विषय : अर्थशास्त्रा

## अध्याय ४ – भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान चुनौतियां

### निर्धनता

निर्धनता से अभिप्राय है जीवन के लिए न्यूनतम उपयोग आवश्यकताओं की प्राप्ति का न होना।

### निर्धनता के प्रकार

१. सापेक्ष निर्धनता – सापेक्ष निर्धनता से अभिप्राय विभिन्न वर्गों, प्रदेशों या दूसरे देशों की तुलना में पाई जानेवाली निर्धनता से है। जिस देश या वर्ग के लोगों का जीवन निर्वाह स्तर नीचा होता है वे उच्च निर्वाह स्तर के लोगों या देश की तुलना में गरीब या सापेक्ष रूप से निर्धन माने जाते हैं।
२. निरपेक्ष निर्धनता – निरपेक्ष निर्धनता से अभिप्राय किसी देश की आर्थिक अवस्था को ध्यान में रखते हुए निर्धनता के माप से है। भारत में निरपेक्ष निर्धनता का अनुमान लगाने के लिए निर्धनता रेखा की धारणा का प्रयोग किया गया है।

निर्धनता का श्रेणीकरण – श्रेणी १ चिरकालिक निर्धनता – वे जो सदैव निर्धन रहते हैं और जो सामान्यता निर्धन रहते हैं। उदाहरण भूमि रहित श्रमिक और अनियमित भजदूर।

श्रेणी २ अल्प कालिक निर्धन – (१) वे सभी व्यक्ति जो निरन्तर निर्धन और गैर निर्धन वर्गों के बीच आता जाता रहता है जैसे मौसमी मजदूर और (२) अल्पकालिक निर्धन

श्रेणी ३ कभी निर्धन नहीं – वे व्यक्ति जो कभी निर्धन नहीं होते, इन्हें गैर निर्धन कहा जाता है।

यह अनुमान लगाया गया है कि तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, बिहार, उड़ीसा तथा मध्यप्रदेश में निर्धनों की संख्या सबसे अधिक है। उत्तरप्रदेश की लगभग ३१.२ प्रतिशत बिहार की ४२.६ प्रतिशत, उड़ीसा की ४७.२ प्रतिशत, मध्यप्रदेश की ३७.४ प्रतिशत अनुमानित जनसंख्या निर्धनता रेखा से नीचे रह रही है।

### निर्धनता के कारण

१. राष्ट्रीय उत्पाद का निम्न स्तर – भारत का कुल राष्ट्रीय उत्पादन जनसंख्या की तुलना में काफी कम है। इस कारण भी प्रति व्यक्ति आय कम रही है।
२. विकास की कम दर – भारत की पंचवर्षीय योजनाओं में विकास की दर बहुत कम रही है। योजनाओं की अवधि में सफल घरेलू उत्पाद की विकास दर लगभग ४ प्रतिशत रही है। परन्तु जनसंख्या की वृद्धि दर लगभग २ प्रतिशत होने से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि केवल २-४ प्रतिशत हुई है।

३. जनसंख्या का अधिक दबाव – भारत में जनसंख्या उत्पन्न द्रुतिगत से बढ़ रही है, इस वृद्धि का कारण पिछले कई वर्षों से मृत्यु दर का तो कम हो जाना पर जन्म दर का लगभग स्थिर रहना है।
४. स्फीतिक दबाव – उत्पादन की नीची दर तथा जनसंख्या वृद्धि की ऊंची दर के फलस्वरूप भारत जैसी अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाएं स्फीतिक दबाव के जाल में फंस जाती हैं। मुद्रा स्फीति भारतीय अर्थव्यवस्था का एक स्थायी लक्षण बना हुआ है।
५. पूँजी की अपर्याप्तता – पूँजी आर्थिक विकास का एक सहायक तत्व है। पूँजी संचय को किसी देश की उत्पादन क्षमता के एक सूचक के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। निम्न पूँजी निर्माण का अर्थ है कम उत्पादन क्षमता और इसलिए निर्धनता।
६. आधारिक संरचना का अभाव – आर्थिक आधारित संरचना के प्रमुख घटक जैसे ऊर्जा, यातायात तथा संचार और सामाजिक आधारित संरचना के प्रमुख घटक जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य तथा निवास सेवाएं बहुत बुरी अवस्था में हैं। संवृद्धि तथा विकास के कार्यक्रम में ये सभी एक आधार शिला का कार्य करते हैं।

\* \* \* \* \*

#### निर्धनता को दूर करने के उपाय

१. आर्थिक विकास की वृद्धि का गति को बढ़ाना
२. आय की असमानता को कम करना
३. जनसंख्या की वृद्धि दर में कमी
४. अन्य उपाय –
  - १) कृषि का विकास
  - २) कीमत स्तर में स्थिरता
  - ३) बेरोजगार का उन्मूलन
  - ४) उत्पादन तकनीक में परिवर्तन
  - ५) न्यूनतम आवश्यकताओं की सन्तुष्टि
  - ६) पिछड़े क्षेत्रों पर विशेष ध्यान
  - ७) स्वयं रोजगार के लिए अवसर

#### सरकार द्वारा निर्धनता को दूर करने के लिए किए गए

उपाय – (१) स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना

– इस योजना में स्वरोजगार के लिए पहले से लागू सभी योजनाओं को शामिल कर लिया गया है। जैसे–

- (१) समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम
- (२) स्वरोजगार के लिए ग्रामीण युवाओं का प्रशिक्षण कार्यक्रम

- २) संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना – यह योजना सितंबर २००१ को शुरू की गई थी। जवाहर ग्राम समृद्धि योजना तथा रोजगार आश्वासन योजना को इस योजना में मिला दिया गया है।
३. प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना – (१) प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (२) प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना (३) प्रधानमंत्री ग्रामीण – पेयजल योजना
४. जयप्रकाश रोजगार गारन्टी योजना
५. स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना
६. प्रधानमंत्री रोजगार योजना
७. लघु तथा कुटीर उद्योगों का विकास
८. न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम
९. बीस सूत्रीय कार्यक्रम
१०. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी अधिनियम २००५

\* \* \* \* \*

#### अति लघु उत्तर रुपी प्रश्न (१ अंक वाले प्रश्न)

१. गरीबी से आप क्या समझते हैं?
२. भारत में निर्धनता को दूर करने के लिए क्या उपाय किया जाना चाहिए?
३. भारत में निरपेक्ष निर्धनता से क्या अभिप्राय है?
४. सापेक्ष निर्धनता से क्या अभिप्राय है?
५. निर्धनता रेखा की परिभाषा दीजिए।
६. भारत में निर्धनता रेखा से नीचे कौन से व्यक्ति कहलाते हैं?
७. शिक्षित बेरोजगार युवाओं को रोजगार देने के लिए कौन सी योजना लागू की गई है?

#### लघु उत्तर रुपी प्रश्न (३/४ अंक)

१. सापेक्ष और निरपेक्ष गरीबी के मध्य अंतर की कारण करें।
२. निर्धनता से क्या अभिप्राय है? इसके मुख्य दो रूप कौन से हैं।
३. भारत में निर्धनता को हटाने के लिए तीन मुख्य सुझाव दें।
४. भारत सरकार ने निर्धनता दूर करने के लिए कौन से चार उपाय किए हैं?

५. स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना पर एक टिप्पणी लिखे।
६. निर्धनता तथा असमानता किस प्रकार एक दूसरे से सम्बन्धित है?
७. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना को समझाइए।
८. न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम से क्या अभिप्राय है?

#### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (६ अंक वाले प्रश्न)

१. रोजगार गारन्टी एक्ट २००५ क्या है? क्या आप सोचते हैं कि भारत में निर्धनता की समस्या के निवारण में यह सहायता देगा?
२. भारत सरकार द्वारा निर्धनता उन्मूलन के लिए उठाए गए विभिन्न उपायों का वर्णन करें।
३. निर्धनता से क्या अभिप्राय है? भारत में निर्धनता के कारणों का वर्णन करें।

#### अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर (१ अंक)

१. गरीबी से अभिप्राय है जीवन के लिए न्यूनतम उपयोग आवश्यकताओं की प्राप्ति कानहोना है।
२. भारत में निर्धनता को दूर करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में विनिवेश करना चाहिए लघु तथा कुटीर उद्योगों का विकास करना चाहिए।
३. निरपेक्ष निर्धनता से अभिप्राय किसी देश की आर्थिक अवस्था को ध्यान में रखते हुए निर्धनता के माप से है।
४. सापेक्ष निर्धनता से अभिप्राय विभिन्न वर्गों, प्रदेशों या दूसरे देशों की तुलना में पायीजाने वाली निर्धनता से है?
५. निर्धनता रेखा की परिकल्पना सरकार के द्वारा की जाती है यदि किसी व्यक्ति के पास सरकार द्वारा निर्धारित आय है साधन नहीं है तो वह निर्धनता रेखा की परधि में आता है।
६. BPL गरीबी रेखा से नीचे व्यक्ति सरकार द्वारा विशेष सुविधाएँ पाने के हकदार।
७. प्रधानमंत्री शिक्षित रोजगार योजना।

#### लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर (३/४ अंक)

१. सापेक्ष गरीबी –  
– सापेक्ष निर्धनता से अभिप्राय विभिन्न वर्गों प्रदेशों या दूसरे देशों की तुलना में पायी जाने वाली निर्धनता से है।

- निरपेक्ष गरीबी – से अभिप्राय किसी देश की आर्थिक अवस्था को ध्यान में रखते हुए निर्धनता के माप से है।
- २. निर्धनता से अभिप्राय है जीवन के लिए न्यूनतम उपयोग आवश्यकताओं की प्राप्ति का न होना। सापेक्ष तथा निरपेक्ष निर्धनता के दो प्रकार हैं।
- ३.
  - आर्थिक विकास की वृद्धि की गति को बढ़ाना
  - आय की असमानता को कम करना
  - जनसंख्या की वृद्धि दर में कमी
  - कृषि का विकास, कीमत स्तर में स्थिरता
- ४.
  - स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना
  - समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम
  - सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना
  - प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना
- ५. यह योजना सितम्बर २००१ को शुरू की गई थी। जवाहर ग्राम समृद्धि योजना तथा रोजगार आश्वासन योजना को इस योजना में मिला दिया गया है।
- ६. निर्धन व्यक्ति के काम करने के अवसर कम होते उसकी आय कम होती है तथा जीवन स्तर भी निम्न होता यही सभी कारण उसे समाज के दूसरे लोगों की दृष्टि में असमानता की दृष्टि से देखा जाता है इस प्रकार निर्धनता तथा असमानता एक दूसरे से सम्बन्धित हैं।
- ७. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी अधिनियम करने के इच्छुक हैं, उन्हें १०० दिनों की न्यूनतम अवधि के लिए काम दिया जायेगा।
- ८. पाँचवी योजना में निर्धन लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम लागू किया गया। ये कार्यक्रम हैं – प्रारम्भिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, ग्रामीण स्वास्थ्य, ग्रामीण जल आपूर्ति, ग्रामीण सड़के, ग्रामीण – विधुतीकरण, ग्रामीण आवाक आदि।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर (६ अंक)

१. इस एक्ट के अन्तर्गत वे सभी व्यक्ति जो न्यूनतम मजदूरी दर पर काम करने के इच्छुक हैं उन्हें १०० दिनों की न्यूनतम अवधि के लिए काम दिया जायेगा। जो रोजगार प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें उन ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँचना होगा जहाँ रोजगार कार्य शुरू किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की आय में वृद्धि होगी तथा गरीबी की समस्या दूर होगी।

२. – स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना  
– संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना  
– प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना  
– जयप्रकाश रोजगार गारण्टी योजना  
– स्वर्ण जयन्ती शहरी रोजगार योजना  
– प्रधानमंत्री रोजगार योजना  
– महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी अधिनियम २००५
३. परिभाषा अति लघु उत्तरीय भाग में देखे  
– राष्ट्रीय उत्पाद का निम्नस्तर  
– विकास की कम दर  
– जनसंख्या का अधिक दबाव  
– स्फीतिक दबाव  
– पूँजी की अपर्याप्ता  
– आधरिक संरचना का अभाव  
(संक्षेप मे समझाये)